ग़दर-देहली के अख़बार

भारत के अन्तिम सम्राट् बहादुरशाह के मुक़दमे
का परिशिष्टांक। अर्थात् उन समाचारों
का संग्रह जिन पर अङ्गरेज़ों की
ओर से आपत्ति उठाई
गई थी

ॐ

लेखक
ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब

अनुवादक
श्री० बलखण्डीदीन सेठ, बी० ए०

प्रकाशक
नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस
रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

ग़दर देहली के अख़बार

(सम्राट् बहादुरशाह के मुक़दमे में जिन अख़बारों के आपत्तिजनक लेखों की चर्चा हुई है उनका संग्रह)

मूल लेखक

बेगमों के आँसू, बेचारे अङ्गरेज़ों की विपता, बहादुरशाह का मुक़दमा, देहली की जाँकनी, ग़दर-देहली की सुबह-शाम आदि आदि ग़दर सम्बन्धी अनेक पुस्तकों के रचयिता

ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब

अनुवादक

श्री बलखण्डीदीन सेठ, बी० ए०

प्रकाशक

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस

रैन बसेरा :: चुनार

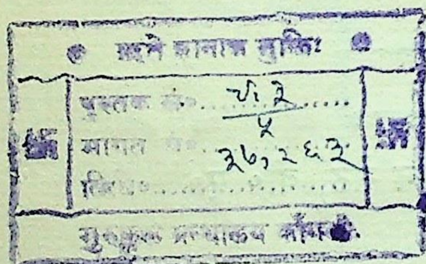
पहला संस्करण] अक्तूबर, १९३४ [मूल्य चार आने

प्रकाशक—

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस

रैन बसेरा :: चुनार





मुद्रक—

गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव

हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग।

हसन निज़ामी

कृत

भूमिका

सर्वशक्तिमान परमात्मा की स्तुति करने के अनन्तर हसन निज़ामी, देहलवी पाठकों की सेवा में यह विनम्र निवेदन करता है कि प्रस्तुत पुस्तक दिल्ली की ग़दर सम्बन्धी कहानियों का छठाँ भाग है। इसमें देहली के विख्यात पत्र 'सादिकुल अख़बार' के उद्धरण एकत्रित किये गये हैं।

उक्त अख़बार के ये उद्धरण बहादुरशाह बादशाह देहली के अभियोग में न्यायालय में पेश किये गये थे। उक्त अभियोग सन् १८५७ ई० में दिल्ली के ग़दर का अन्त हो जाने पर अङ्गरेज़ों की ओर से चलाया गया था। यही कारण है कि इनमें केवल काबुल, ईरान और रूस के समाचारों ही का उल्लेख है और उन्हीं के सम्बन्ध में मत प्रगट किया गया है।

बहादुरशाह बादशाह के अभियोग में ये लेख सरकारी वकील की ओर से अभियोग को सिद्ध करने के अभिप्राय से शहादत के रूप में पेश किये गये थे। अभियोग चलाये जाने के समय एक हिन्दू पत्रकार ने 'सादिकुल अख़बार' को बहुत ही

गर्म और मुँहज़ोर पत्र बयान किया था और उसने उसके सम्बन्ध में यह भी कहा था कि उसे बादशाह तथा शाहज़ादे बड़े चाव से पढ़ते थे। साधारण जनता में भी उसका पर्य्याप्त प्रचार था। उसका सम्पादक एक मुसलमान था। ग़दर के कारणों में इस पत्र की गरमागर्म ख़बरों और लेखों की भी गणना की जाती है।

जिरह के समय हिन्दू पत्रकार ने कहा था कि 'सादिक़ुल अख़बार' की केवल २०० प्रतियाँ छपती थीं। उसके इस बयान पर अङ्गरेज़ वकील ने आश्चर्य से कहा था कि 'तुम्हारे कथनानुसार 'सादिक़ुल अख़बार' देहली का सब से गर्म, मुँहफट तथा अङ्गरेज़ों का विपक्षी पत्र था और बादशाह से लेकर भिखमङ्गे तक उसको पसन्द करते थे परन्तु आश्चर्य यह है कि उसकी ग्राहक संख्या केवल २०० थी।' इसके जवाब में गवाह ने कहा था कि उसको एक मनुष्य ख़रीदता था और बीसियों पढ़ते थे और देहली में यही प्रथा थी कि जब एक आदमी पत्र पढ़ चुकता था तब वह दूसरों को उसे दे देता था और वे सब उसको पढ़ते थे।

इस संग्रह में कुल १३ उद्धरण हैं और इसमें जनवरी सन् १८५७ से लेकर सितम्बर १८५७ तक के उद्धरणों का समावेश किया गया है। अर्थात् ग़दर के चार मास पूर्व, ग़दर के दिन और उसके चार मास पश्चात तक के उद्धरण इसमें हैं। इन सब के पढ़ने तथा इन पर विचार करने से ज्ञात होता है कि इस उर्दू पत्र का सम्पादक अङ्गरेज़ों का शत्रु न था। गवाही में एक

भी ऐसा लेख तथा समाचार नहीं पेश किया गया, जिसमें सम्पादक ने अङ्गरेजों के विरुद्ध लिखा हो अथवा अङ्गरेजों के विरुद्ध घृणा तथा वैर पैदा करने का प्रयत्न किया हो। 'सादिकुल अख़बार' ने केवल ईरान, काबुल और रूस के समाचार लिखे हैं और उन समाचारों पर अपना मत प्रकाशित करते समय एक सच्चे और स्पष्टवादी पत्रकार की भाँति लिख दिया है कि बृटिश-शक्ति महान है और उसको ख़तरे में समझना एक भ्रान्ति-मात्र है। उस पत्र ने अपने पाठकों को प्रसन्न करने के अभिप्राय से कोई बात ऐसी नहीं लिखी जो अनर्गल तथा निर्मूल हो। और जिस समाचार में उसे बुद्धि से अगम्य अतिशयोक्ति का आभास हुआ, उसका उसने मुँहतोड़ खण्डन कर दिया और बृटिश शासन की दृढ़ता और उसकी अच्छाइयाँ पाठकों पर साफ़ साफ़ विदित कर दीं जिसमें समाचारों से कोई भ्रम न पैदा हो।

स्पष्ट है कि ये उद्धरण एक ऐसे अभियोग में पेश किये गये थे जिसमें बहादुरशाह, मुसलमानों तथा भारतवासियों पर यह बात प्रमाणित करना इष्ट था, कि वे बृटिश सरकार से विरुद्ध षड़यन्त्र रचते, ग़दर करते तथा उपद्रव मचाते थे, इस कारण इसमें 'सादिकुल अख़बार' से केवल वैसे ही उद्धरण छाँटे गये होंगे जिनमें इस प्रकार का कुछ भी मसाला मिला होगा और ऐसा कोई भी लेख न छोड़ा गया होगा जो सरकारी वकील को अपने उद्देश्य के लिये लाभप्रद हो। परन्तु साधारण

बुद्धि का मनुष्य भी इन उद्धरणों को देख कर कह सकता है कि इनमें कोई भी उद्धरण अभियोग को सिद्ध करने में समर्थ नहीं हैं। वरन् इन सब से अभियोग झूठा ही प्रमाणित होता है, क्योंकि पत्र ने भ्रान्ति-मूलक प्रवादों की खुल्लम-खुल्ला निन्दा की है और उनको बुद्धि से परे बताया है।

बहादुरशाह के अभियोग पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि ग़दर के अन्त के पश्चात् हिन्दू-मुसलमानों में वैमनस्य हो गया था। वैमनस्य का कारण कुछ भी हो; परन्तु इतनी बात अवश्य स्पष्ट है कि वैमनस्य बिल्कुल खुल्लम-खुल्ला था। बहादुरशाह पर अभियोग चलने के समय जो हिन्दुस्तानी गवाह पेश हुये, उनसे हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की बू आई और हिन्दुओं ने मुस्लिमों के विरुद्ध और मुसलमानों ने हिन्दुओं के विरुद्ध आक्षेप आरोपित किये। अब यदि हिन्दू पत्रकार ने 'सादिकुल अख़बार' के मुसलमान सम्पादक के विरुद्ध न्यायालय को उत्तेजित करने का प्रयत्न किया तो इसमें आश्चर्य ही क्या है, क्योंकि उस समय प्रत्येक जाति दूसरी जाति को ग़दर का कारण बताती और अपनी जाति को उस आक्षेप से बचाती थी। स्वभावतः ही बृटिश अफ़सरों के दिल में मुसलमानों पर षड़यन्त्र रचने तथा ग़दर करने का सन्देह था, क्योंकि वे देश के शासक रह चुके थे और दूसरे बादशाह के शासन के विरुद्ध होना उनके लिये स्वाभाविक था।

'सादिकुल अख़बार' के ये उद्धरण आज से साठ-बासठ वर्ष पहले की पत्रकार कला का भी अच्छा दिग्दर्शन कराते हैं।

पाठकों को इनसे विभिन्न प्रकार की मनोरञ्जक बातों के चुनने का अवसर प्राप्त होगा।

इन उद्धरणों में सब से अधिक आश्चर्यजनक बात यह है 'सादिकुल अख़बार' के वे लेख भी चुने गये हैं जो ठीक ग़दर के दिन और ग़दर के चार महीने पश्चात् तक प्रकाशित होते रहे। परन्तु इनमें भी बृटिश सरकार के विरुद्ध एक भी शब्द नहीं है। पत्रकार ने ग़दर के पश्चात्, जबकि देहली में अङ्गरेज़ों का नाम व निशान भी बाक़ी न था और बृटिश सरकार व बृटिश साम्राज्य का अस्तित्व आशा व निराशा के झकोरों से प्रभावित होकर डगमगा रहा था और जब हिन्दू-मुसलमान दोनों ही अङ्गरेज़ों के विरुद्ध लेख छपने से प्रसन्न होते थे और जब सम्पादक को अङ्गरेज़ों का किसी प्रकार का भी भय न था, 'सादिकुल अख़बार' में बृटिश सरकार के विरुद्ध कोई लेख नहीं छपा। यदि छपा होता तो सरकारी वकील अपनी गवाही में उसको अवश्य पेश करता। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि भारत के पत्रकार अङ्गरेज़ी पत्रकारों की अपेक्षा अधिक आध्यात्मिक शक्ति रखते हैं और साधारण-सी बात पर छिछोरों की भाँति आपे से बाहर नहीं हो जाते।

'सादिकुल अख़बार' की इस चुप्पी और दूरदर्शिता से इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि उसके सम्पादक की दृष्टि बहुत गहरी थी और वह अत्यन्त अनुभवी तथा फ़ौजी और मुल्की हालत का बड़ा अच्छा जानकार था। और उसने समझ लिया था

कि वर्तमान ग़दर बृटिश साम्राज्य का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता और भारत की फ़ौजी व राजनैतिक तदबीरें अङ्गरेज़ों के फ़ौजी तथा राजनैतिक जोड़-तोड़ पर विजय नहीं पा सकतीं। इसी कारण उसने कोई भी लेख उपद्रवकारियों तथा उनके सहायकों के पक्ष में नहीं लिखा।

यह बात भी भारतीय पत्रकारों के लिये गौरवपूर्ण है कि उनमें इस दिल व दिमाग़ के सम्पादक विद्यमान थे, जैसा कि 'सादिकुल अख़बार' का सम्पादक था।

इन उद्धरणों का उर्दू से अङ्गरेज़ी में अनुवाद हुआ था। सरकारी वकील ने उनको न्यायालय में पेश किया था और ये बहादुरशाह के अभियोग की मिसिल में सम्मिलित किये गये थे। ये एक बड़ी मोटी पुस्तक के रूप में अङ्गरेज़ी भाषा में सरकार की ओर से प्रकाशित किये गये थे। अब अङ्गरेज़ी से मैंने उर्दू में इनका अनुवाद कराया है। सम्भव है कि कई बार के उलट-फेर के कारण 'सादिकुल अख़बार' का असली रूप बिल्कुल बदल गया हो! वह बात अनुवाद के तीसरे चोले में आ नहीं सकती जो 'सादिकुल अख़बार' की मूल उर्दू में होगी।

हसन अज़ीज़ साहेब भूपाली, अनुवादक ने इस प्राक्कथन का अनुवाद किया है जिसमें का एक भाग यह है। यदि बहादुरशाह के अभियोग की कार्यवाही एक जगह पुस्तकाकार छापी जाती तो ५०० पृष्ठों से भी अधिक होती। अतः इसके तीन भाग कर दिये गये हैं। एक का नाम है—'बहादुर

शाह का मुक़दमा' जो दिल्ली की उपद्रव-सम्बन्धी कहानियों का चौथा भाग है, और दूसरा 'ग़दर देहली के पत्र' जो पाँचवाँ भाग है, और तीसरा भाग इस संग्रह के रूप में है, जिसका नाम 'ग़दर देहली के अख़बार' है और जो दिल्ली की उपद्रव सम्बन्धी कहानियों का छठाँ भाग है।

अनुवादक का यह प्रथम प्रयास था और उन्होंने मेरी जल्दी के कारण बीस दिन में अङ्गरेज़ी पुस्तक के २०० पृष्ठों का अनुवाद किया था; क्योंकि जिस पुस्तक से अनुवाद हुआ था, वह केवल बीस दिनों के लिये मिली थी। इसी कारण अनुवाद में मुहाविरे की बहुत-सी त्रुटियाँ रह गई हैं और कहीं-कहीं मतलब भी उल्टा-सीधा हो गया। विशेषतः स्थानों और मनुष्यों के नामों में बहुत ही गड़बड़ी हो गई है, जो मेरे विचार से एक ऐसी त्रुटि है जिससे पाठकों को कष्ट होगा। तथापि मैंने प्रत्येक त्रुटि को दूर करने का यथासाध्य प्रयत्न किया है और उसको ठीक भी कर दिया है और नामों के अतिरिक्त और कोई त्रुटि शेष नहीं रहने दी। पाठक स्वयं समझ लेंगे कि विषय के सिलसिले तथा मतलब के समझने में कहीं कोई कसर नहीं है।

अनुवाद करना बड़ी कठिन बात है। विशेषतः प्रथम प्रयास में त्रुटियों का होना सम्भव है। परन्तु हसन अजीज साहेब प्रशंसा के योग्य हैं, जिन्होंने इतनी जल्दी बहुत अच्छा अनुवाद कर दिया और अनुवाद की कठिनाइयों पर विजय पा ली। अङ्गरेज़ों के नामों को बहुधा उर्दू में लिखने में कठिनाइयाँ पेश

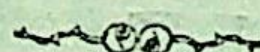
आती हैं। यही हाल इस किताब और इसके भागों का है कि इसमें अङ्गरेज़ों के नामों के उच्चारण सम्भवतः ठीक नहीं हो सके। बाक़ी मतलब सब के सब ठीक हैं। इस कारण मैं हसन अज़ीज़ साहेब भूपाली को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने प्रथम प्रयास में ही अनुवाद को शीघ्रता से पूर्ण कर दिया।

अनुवाद होते समय ही यह सूचना मिली कि देहली के एक और सज्जन ने बहादुरशाह के अभियोग का थोड़ा सा भाग दिल्ली के इतिहास में सम्मिलित किया था। मैंने उस किताब को बहुतेरा ढुँढ़वाया, परन्तु वह हाथ न आई। मुझे उन सज्जन के लिखने पर विश्वास भी नहीं है, क्योंकि वह फ़र्ज़ी बातों को इतिहास में सम्मिलित कर देते हैं और उनके झूठ लिखने की आदत पर शम्सुलउल्मा मौलाना शिबली तक आश्चर्य-चकित थे। अतएव मैंने उनकी पुस्तक को अधिक नहीं ढूँढ़ा और स्वयं ही अनुवाद कराया।

अङ्गरेज़ी भाषा में 'बहादुरशाह का मुक़दमा' ट्रायल ऑफ़ बहादुरशाह (Trial of Bahadurshah) के नाम से छपा है और देहली के सरकारी पुस्तकालय में उसकी मूल अङ्गरेज़ी प्रतिलिपि विद्यमान है। जिस किसी को आवश्यकता हो, देख सकता है ताकि सन्देह के समय अनुवाद के वे भाग जो उसकी समझ में न आते हों, समझ में आजायँ।

१७ दिसम्बर, १९१९

—हसन निज़ामी, देहली



ग़दर देहली के अख़बार

देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

पृष्ठ २८९

ईरान—ईरानी समाचार-पत्रों से यह विदित हुआ है कि ईरान के शाह ने अपनी सब सेनाओं को विभिन्न प्रान्तों से बुलाकर तेहरान में दूसरी आज्ञा मिलने तक ठहरने का आदेश दिया है। इस विषय में यह कहा जाता है कि वे सेनायें आज्ञाओं का अक्षरशः पालन करेंगी। सही समाचार मिला है कि यह आज्ञा जो अमीर दोस्त मुहम्मद ख़ाँ की आशा के विपरीत है, वास्तव में अपने अभिप्रेत उद्देशों के छिपाने के निमित्त ईरान के शाह की एक चाल है। उनका अभिप्राय अमीर से लड़ने का नहीं है, वरन् वे अङ्गरेज़ों से लड़ना और उन पर विजय पाना चाहते हैं। अमीर बृटिश-शक्ति पर भरोसा करके अङ्गरेज़ों से मिल गये हैं और वही अङ्गरेज़ों और ईरानियों के बीच के वैमनस्य के कारण हैं। ईरान के शाह ने

सम्प्रति अङ्गरेज़ों से मैत्री के सम्बन्ध प्रगट रूप से बिच्छेद नहीं किया और न उन्होंने दोस्त मुहम्मद खाँ से ही निजी शत्रुता धारण की है। तथापि यह सच है, कि तीनों शक्तियों में कुछ न कुछ विचार-भेद अवश्य हो गया है।

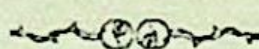
देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या ४, खण्ड ३—ता० २६ जनवरी, १८५७

फ्रान्स—सब समाचार-पत्रों का यह सम्मिलित-मत है, कि फ़ान्स के बादशाह और टर्की के सम्राट ने अब तक अङ्गरेज़ों या ईरानियों में से किसी का भी साथ देने की घोषणा नहीं की। किन्तु दोनों विपक्षी शक्तियों के राजदूत दोनों उपरोक्त राज्यों में भेंट की वस्तुएँ लेकर प्रछन्न रूप से जाते हैं। कुछ लोगों का यह विचार है, कि फ़ान्स के बादशाह और टर्की के सम्राट अङ्गरेज़ों और ईरानियों के बीच के झगड़े में न पड़ेंगे। परन्तु अधिकतर लोग यह कहते हैं कि वे दोनों ईरानियों का पक्ष लेंगे। पीछे से जो बात ज्ञात होगी, बिला घटाये-बढ़ाये छाप दी जायगी। रूसियों के सम्बन्ध में यह बात है कि उन्होंने अपनी उन तैयारियों को, जिनसे वे मदद करेंगे, गुप्त नहीं रक्खा है। वे सेना और धन से ईरानियों को सहायता पहुँचाते रहेंगे। यह भी कहा गया है कि वास्तव में रूसी ही इस युद्ध के प्रेरक हैं और ईरानियों की आड़ लेकर अपनी भारत-विजय की इच्छा को पूरा करना चाहते हैं। यह निश्चित बात है कि रूसी एक

वीर सेना लेकर युद्ध-क्षेत्र में पदार्पण करेंगे। यदि आगे चल कर कुछ ठीक पता चला तो प्रकाशित किया जायगा। समाचार-पत्र 'सादिक़' के पाठकों को इस बात की प्रतीक्षा करनी चाहिये, कि भविष्य के गर्भ से क्या प्रगट होता है।



देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या २, खण्ड ३—ता० १६ मार्च, १८५७

पृष्ठ ८२—८३

ईरान का दरबार—बम्बई के पिछले समाचार-पत्रों से जो इस प्रेस में प्राप्त हुये हैं, मालूम हुआ है कि ईरान के शाह ने हिरात के रईसों तथा अपने उमराओं को एक दिन अपने दरबार में निमंत्रित किया और युद्ध के सम्बन्ध में एक कान्फ्रेंस की। बहुत-कुछ परामर्श के पश्चात् उन्होंने अङ्गरेज़ों से युद्ध ठानने का मत निश्चित किया और यह विश्वास करके, कि ईश्वर उनको सफलता देगा, उन्होंने कहा कि हिरात-विजय के उपरान्त तुम हिन्दुस्तान के द्वार पर पहुँच जाओगे। फिर कहा कि रूसियों की भी इच्छा है कि ईरानी अङ्गरेज़ों से युद्ध ठानें और हिन्दुस्तान विजय करें। इस पर बादशाह ने बयान किया कि मैं उन उमराओं से बहुत प्रसन्न हूँ, जिन्होंने कृतघ्न प्रधान-सचिव के विरुद्ध सम्मति दी है। उसने इस बात का भी पवित्र वचन दिया कि जब मैं भारतवर्ष पहुँच जाऊँगा तो उन लोगों को भारत के विभिन्न प्रान्तों का गवर्नर बनाऊँगा जिनमें का एक

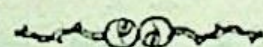
प्रान्त बम्बई है, दूसरा कलकत्ता और तीसरा पूना इत्यादि होगा। और मैं ताज देहली के बादशाह को सौंप दूँगा।

इसी बीच में सूचना मिली कि प्रधान-सचिव ने शाही ताज को जिसमें बहुमूल्य जवाहरात थे, एक व्यापारी हाजी अली के द्वारा चोरी से एक लाख पच्चीस हज़ार फ़्रैङ्क में बेच डाला और उसे (व्यापारी को) चतुर्थ भाग दिया। इस पर बादशाह ने प्रधान-सचिव को बुला कर इस विषय में पूछताछ की किन्तु उसने अनभिज्ञता प्रगट की। फिर बादशाह ने व्यापारी को बन्दी करके उस पर जुर्माना किया और प्रधान-सचिव पर उसके विदेशियों से व्यवहार रखने के कारण असीम रोष तथा अप्रसन्नता प्रकट की। यह बताया जाता है कि प्रधान-सचिव के कर्त्तव्य किसी दूसरे सज्जन के सिपुर्द किये गये हैं। उपरोक्त प्रधान-सचिव ने बादशाह को शान्ति की नीति धारण करने की सम्मति दी थी। बादशाह को सूचित किया गया है कि रूसी सम्राट् ने चालीस हज़ार सेना बहुत सी युद्ध-सामग्री तथा शस्त्रास्त्र के साथ उसकी सहायता के लिये रवाना की है। इस सेना की अनेक टुकड़ियाँ ईरानियों से आकर मिल भी गई हैं और यह भी समाचार मिला है कि रूसी सम्राट ने कहा है, कि यदि प्रेषित सेना युद्ध के लिये अपर्याप्त हो तो संग्राम करने के लिये और सेना भेज दी जायगी। इन बातों के उत्तर में बादशाह ने रूसी सम्राट् एलेक्ज़ेन्डर की बहुत प्रशंसा की और ये अनुशासन प्रचारित किये कि रूसी सेना के व्यय के निमित्त उसके कोष से रुपया ले

लिया जाय और रूसी सेना के किसी हरकारे तक को भी किसी प्रकार की असुविधा या कष्ट न दिया जाय। इसके पश्चात् फ़ान्सीसी राजदूत ने यह हर्ष-समाचार सुनाया कि हमारा बादशाह जो कुछ दिन से रुग्ण था, अब ईश्वर की कृपा से पूर्ण-रूप में स्वस्थ हो गया है। बादशाह ने यह सुन कर कहा कि ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ। फिर राजदूत-जॉर्जिया ने अपने स्वामी की ओर से बादशाह से प्रार्थना की कि इङ्गलैण्ड और टर्की के क़ानून के विरुद्ध आपके राज्य में अभी तक दास-विक्रय की प्रथा जारी है।

ईरान में ईरानी बादशाह के अङ्गरेज़ों से युद्ध करने का विशेष कारण यह बताया जाता है कि ईरानी राज्य को पाँच पुश्तों से भारत-विजय के उन्माद का रोग लगा है और उसी काल से प्रत्येक प्रकार के शस्त्रास्त्र, युद्ध-सामग्री तथा कोष एकत्रित किये जा रहे हैं; परन्तु इनमें से किसी एक ने भी अपने विचारों को कार्य रूप में परिणत नहीं किया। अतः वर्तमान बादशाह नासिरुद्दीन की भी लालसा है और यह उसकी प्राचीन इच्छा है जो पैतृक रूप में उसे मिली है। अब एक ओर तो हिरात सुगमता से अधिकार में आगया, दूसरी ओर रूसी दैवी सहायता पहुँच गई है, तीसरे उमराओं ने एक स्वर से भारतवर्ष पर आक्रमण करने की सम्मति दी और कहा कि ईश्वर विजय प्रदान करेगा। चौथे यह, कि समस्त ईरानी प्रजा जहाद करने के लिये उठ खड़ी हुई है। इसी कारण ईरान के बादशाह पूर्ण आयोजन

से युद्ध के लिये उद्यत हैं। कहा जाता है कि काबुल-नरेश अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ भी प्रच्छन्न रूप में ईरानी शाह से मिले हुए हैं और प्रकाश्य रूप में अङ्गरेज़ों से कहते हैं कि ईरान से उनकी घोर शत्रुता है और इस शत्रुता का कारण यह बतलाया जाता है, कि ईरान के बादशाह ने शाहज़ादे यूसुफ़ को हिरात में शासक नियत किया था और अब यह शाहज़ादा ईरानी शाह को यह परामर्श देता है कि काबुल का शासन अमीर से छीन कर मुझे दे दिया जाय। यही कारण है, ईरानी काबुल की ओर बढ़ रहे हैं। उन्हें (अमीर काबुल को) अत्यन्त भय है कि ईरानी शाह शुजा-उल-मुल्क के निर्वासन के बदले अफ़ग़ानों से काबुल न छीन लें। काबुल को प्रस्थान करते हुये अमीर ने ईरानी शाह को इस प्रकार पत्र लिखा कि तुम ईरानी शाह की प्रजा हो और तुम्हें बृटिश सरकार से कुछ सम्बन्ध नहीं है।



देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या ११, खण्ड २—ता० १६ मार्च, १८५७ ई०

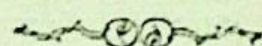
ईरान के शाह की घोषणा—ईरान के शाह की घोषणा की कई प्रतियाँ गलियों और सड़कों के नुक्कड़ों पर चिपकी हुई मिली हैं। मेरे एक मित्र ने इस घोषणा की, जो जामा मस्जिद के पीछे चिपकी है, अक्षरशः एक नक़ल कर ली है। इस घोषणा को बहुतेरे मनुष्यों ने देखा है। संक्षिप्त रूप से उसमें यह है:—"जो लोग सच्चे धर्म के अनुयायी हैं उनका यह धर्म है कि ईसाइयों की सहायता न करें। और सच्चे रास्ते पर होने के कारण मुसलमानों की उन्नति में अपनी सारी शक्ति व्यय कर दें। वह समय निकट आ रहा है जब हम (शाह ईरान) भारत के तख़्त पर विराजमान होंगे और प्रजा को उतना ही खुशहाल बना देंगे जितना अङ्गरेज़ों ने ग़रीब बना दिया है। हम स्वयं उनकी उन्नति की ओर ध्यान देंगे। हम किसी के धर्म में भी बाधा नहीं डालते और न वहाँ ही डालेंगे।" मुहम्मद सादिक़ नाम के एक व्यक्ति ने जिसके द्वारा यह घोषणा की गई थी, कहा है कि ६ तारीख़ तक ९०० ईरानी सिपाही लेकर कुछ प्रतिष्ठित अफ़सरों के साथ भारत में आ चुके हैं और देहली शहर में ५००

सिपाही वेष बदले हुये विभिन्न रूपों में मौजूद हैं। वह अपने सम्बन्ध में लिखता है कि मैं ४ मार्च को देहली पहुँचा जहाँ पर घोषणा-पत्र चिपका दिये गये हैं। उसका यह भी कथन है कि देश के प्रत्येक भाग से उसके पास समाचार आते रहते हैं और वह देश के हर एक बात की सूचना यथारीति शाह ईरान को देता है। और भविष्य में ईरानी फ़ौज के आवागमन के समाचार वह प्रत्येक व्यक्ति पर ज़ाहिर कर दिया करेगा।

लोगों का यह अनुमान है कि यह घोषणा थोड़े से निठल्ले लोगों की गढ़ी हुई है। और मैं भी उन्हीं लोगों से एक मत होकर यह पूछना चाहता हूँ कि मुहम्मद सादिक खाँ के देहली आने का अभिप्राय क्या है? यदि लड़ाई करना उसका अभिप्राय है तो इस प्रकार उसका आना बेकार है। यदि वह जासूस की अवस्था में आया है तो उसका इस प्रकार अपने आप को ज़ाहिर करना निरी अज्ञानता और मूर्खता है। इतना ही नहीं, वरन् अपने उस अभिलषित उद्देश्य में जितना द्रव्य भी वह व्यय करेगा, सब व्यर्थ जायगा। तमाम बातों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि उसके मनोरथ का निष्फल होना अवश्यम्भावी है। इसके अतिरिक्त इस बात पर भी विचार करना आवश्यक है कि शाह ईरान के भारत पर शासन करने से भारत-निवासियों को कौन-सा सुख हो सकता है?

घोषणा से यह बात स्पष्ट है कि वह स्वयं भारत पर शासन करना चाहता है। भारतवासी तो उस समय प्रसन्न होंगे, जब

शाह ईरान अब्बास शाह सफ़ी की तरह हमारे निजी बादशाह को शासन की बाग-डोर सौंप दें और आश्चर्य भी नहीं जो वे ऐसा करें; क्योंकि तैमूर ने स्वयं ईरानियों को शासन-तंत्र प्रदान किया था और ज्यादा गहरी निगाह डालने से विदित होगा कि अब्बास शाह सफ़ी ने हमारे हुमायूँ की सहायता की थी।





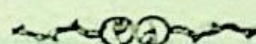
देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या १२, खण्ड ३—ता० २३ मार्च, सन् १८५७

ईरान के शाह के नाम से घोषणा—पहले-पहल उपद्रवकारियों ने देहली में झगड़ा खड़ा करने के लिये शाह-ईरान की ओर से एक घोषणा जनता को धोखे में डालने के अभिप्राय से जामा मस्जिद के पिछवाड़े चिपका दी थी। इस घोषणा का सारांश यह था, कि हिन्दू-मुसलमान दोनों ईसाइयों की सहायता न करें और यह भी घोषित किया गया था कि ईरान के शाह शीघ्र ही भारत-विजय करेंगे और लोगों को इनाम देकर खुश करेंगे। इस घोषणा के निकालने वाले ने अपना नाम मुहम्मद सादिक़ बताया है। यह कहा जाता है कि इस झूठी और अविश्वसनीय बात से देहली के हाकिम बहुत बिगड़े हैं। मुझे विश्वास है कि जो व्यक्ति ऐसे झूठे धोखेबाज़ को गिरफ़्तार करावेगा उसे मुँह-माँगा इनाम मिलेगा। परन्तु वह हाथ लगेगा भी या नहीं, यह बात केवल ईश्वर ही जानता है। हमें विश्वास है कि यदि हमारे मिस्टर मुहम्मद सादिक खाँ जालसाज़ जिन्होंने यह घोषणा निकाली है, सरकार के हाथ

आ गये तो सिरके में भीगा हुआ एक दो तल्ले का जूता उनकी खोपड़ी पर ऐसा पड़ेगा कि चाँद गञ्जी हो जायगी। उस समय इन महाशय की समझ में यह बात भली भाँति आजायगी कि शीशे के घर में रह कर दूसरों पर पत्थर फेंकने के क्या अर्थ हैं और यह सारी वेवक़ूफ़ियाँ किस प्रकार नाक की राह झड़ती हैं।



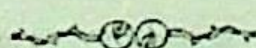
देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या ५, खण्ड १६—ता० १२ अप्रैल, सन् १८५७

काबुल—देहली गज़ट का एक सम्बाददाता काबुल से २९ मार्च को लिखता है कि एक छोटी सी फौज, जिसको अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ ने पेश बोलाक और सरजू खैल नामक जातियों के दबाने के लिये भेजा था, मुहम्मद खाँ शाह से मुक़ाबिला करने के पश्चात्, जिसमें उसके लगभग ३० मनुष्य निहत और इतने ही आहत हुये हैं, जलालाबाद वापस आ गई है। अमीर के सिपाहियों के हाथ बहुत सा लूट का माल लगा है और खाँ अपने प्राणों की रक्षा के लिये पहाड़ी क़िलों में जो लमधान में हैं, जा छिपा है। मीर दाद खाँ का भाई अभी जलालाबाद से आया है और उसने सम्बाददाता को सूचित किया है कि अमीर 'तातमेंग़' की ओर बढ़ रहे हैं परन्तु यह बात अभी निश्चित नहीं है कि वे 'नौरोज़' बिला बाग़ में मनायेंगे अथवा काबुल में। मीर दाद खाँ के भाई ने यह भी बयान किया है कि हिन्दुस्तान से प्रकाशित कई अङ्गरेज़ी समाचार-पत्र अमीर के सामने पढ़े गये जिनमें सरकार के कुप्रबन्ध पर समालोचना की गई थी और कहा गया था, कि वह अमीर को बेकार रुपया देती है। यद्यपि

उनका सम्बन्ध दो तरफ़ा है। अमीर ने यह सुन कर कहा कि जब सरकार पर कोई विपत्ति आ पड़ती है तो वह लाखों पौण्ड खर्च कर डालती है। अब जब कि ईरानी रूसियों की प्रेरणा से अफ़गानिस्तान पर चढ़ाई की तैय्यारियाँ केवल भारत सरकार को तंग करने के अभिप्राय से कर रहे हैं, उस समय गवर्नर-जनरल ने अमीर के साथ की गई सन्धि पर पुनः विचार किया और निश्चित किया कि वह सन्धि बनाये रहने के योग्य है। सम्बाददाता का कहना है कि काबुल में इस बात की बहुत चर्चा है कि सुल्तान मुहम्मद खाँ की ही प्रेरणा से इमाम हाजी पहाड़ी प्रदेशों के निवासियों को भड़का रहा है। और इस बात का भी विश्वसनीय समाचार मिला है कि सुल्तान खाँ ने ईरान की हिरात-स्थित फ़ौजों के प्रधान सेनापति से गरिश्क पर आक्रमण करने की प्रार्थना की है और यह भी कहा है कि यदि गरिश्क के निवासियों ने सहायता देना स्वीकार कर लिया तो तीन साल का कर माफ़ कर दिया जायेगा।



देहली के समाचार-पत्र

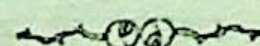
'.खुलासतुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या ८, खण्ड १—ता० १३ अप्रैल, सन् १८५७

ईरान—थोड़े दिन बीते जामा मस्जिद की दीवार पर एक घोषणा-पत्र चिपकाया गया था। उस पर एक तलवार और एक ढाल की शकल बनी हुई थी और यह कहा जाता था कि यह घोषणा ईरान के शाह की ओर से आई है। उसका संक्षिप्त रूप यह है:—

"समस्त सच्चे मुसलमानों का यह धार्मिक कर्त्तव्य है कि वे ईरान के शाह की सहायता करने में कटिबद्ध हों और सच्चे हृदय से उसके शासन और अधिकारों को पुष्ट करें और अङ्गरेज़ों के विरुद्ध धार्मिक युद्ध में प्रवृत हों ताकि उन्हें नष्ट और बरबाद करके उसकी कृपा के पात्र बनें, और उन पुरस्कारों तथा उपाधियों को प्राप्त करें जो ईरान का शाह उनको उदारता-पूर्वक प्रदान करेगा। पुनः घोषणा में इस बात का भी उल्लेख था कि ईरान के शाह अथवा जमशेद द्वितीय अत्यन्त शीघ्र हिन्दुस्तान आयेगा और इस देश को स्वतन्त्र बनायेगा। ईरान में जन-साधारण एकत्र होकर इस वाक्य को बार बार दोहराते हैं—"हे ईश्वर, ईरान की भूमि को विपत्तियों की वायु से उस

समय तक बचाओ जब तक वायु तथा पृथ्वी का अस्तित्व रहे।"
मैजिस्ट्रेट की इजलास में असंख्य गुमनाम आवेदन-पत्र इस विषय के आये हैं कि आज की तारीख़ से एक मास पश्चात् काश्मीर पर, जिसके सौन्दर्य तथा स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु के विषय में एक कवि ने निम्नलिखित वाक्य कहा है, कि 'यदि एक बुलबुल कबाब के रूप में काश्मीर में लाया जाय तो काश्मीर की वायु से उसके भी बाल व पर पैदा हो जायँगे' आक्रमण किया जायगा, और यह प्रदेश ईरानियों के अधिकार में आ जायगा। इस समाचार-पत्र का सम्वाददाता इन समस्त बातों को मूर्खतापूर्ण तथा अनर्गल प्रलाप-मात्र समझता है; क्योंकि यदि देश अपने शासकों के हाथ से यों ही निकल जाया करें, तो फिर सेना रखने से क्या लाभ!



देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या १६, खण्ड ३—ता० ११ मई, १८५७ ई०

ईरान के शाह का भारत-विजय सम्बन्धी घोषणा-पत्र—अँगरेज़ी समाचार-पत्र 'पञ्जाबी' का सम्पादक अपने पत्र के ११ वें अंक में लिखता है, कि सहम्मरा नगर पर अधिकार करते समय उसके सम्वाददाता को शाहज़ादे के शिविर से एक घोषणा-पत्र प्राप्त हुआ जिसका सार उस सम्बाददाता ने तार द्वारा सम्पादक को रवाना किया है और जिसे अब पाठकों के समक्ष उपस्थित किया जाता है। घोषणा-पत्र का सार निम्नलिखित है:—

"विदित हो कि अङ्गरेज़ी सरकार ने अपनी विजय का झण्डा सब से पहले भारतवर्ष में गाड़ा है और अब वह धीरे-धीरे समस्त पूर्वीय राज्यों के बलवान शासकों को अपने अधिकार में ला रही है। कुछ काल पहले उसने अफ़ग़ानिस्तान पर अधिकार कर लिया था किन्तु अफ़ग़ानों के निरन्तर युद्धों से तङ्ग आकर उसे छोड़ना पड़ा। इसके पश्चात् उसने लाहौर व पेशावर तथा अन्य स्वतन्त्र प्रदेश ले लिये। अब वह अफ़ग़ानिस्तान द्वारा आकर ईरानी राज्य को भी अधिकृत करना चाहती है और

यही कारण है कि वह हमारे सहधर्मी पड़ोसी अफ़ग़ानों से मित्रता कर रही है; जिससे ये लोग उसे गुज़र जाने दें और वह आकर ईरान का सर्वनाश कर दे और सच्चे धर्म के अनुगामियों में भेद उत्पन्न कर दे। इसके अतिरिक्त यह भी किया गया है कि ईरान पर सैन्य-सञ्चालन के निमित्त एक अङ्गरेज़ी फ़ौज स्थल मार्ग से रवाना हो गई है। और उसने एक समुद्रस्थित क़िला, जो उसके मार्ग में पड़ता है और मुसलमानों के अधिकार में था, ले भी लिया है और वहीं डेरा डाले हुये है; किन्तु सरकार उसे अत्याचार नहीं करने देती; क्योंकि वह जानती है कि यदि वह ऐसा करेगी तो उसे मुसलमानों के रोष तथा तेज़ तलवार की धार से काम पड़ेगा और अत्यन्त ही शीघ्र जैसे मछली पानी के बाहर तड़पती है वैसी अवरुद्ध श्वास सी दशा को प्राप्त करेगी और दम तोड़ती फिरेगी। अतएव ईरान के बादशाह शाह नासिरुद्दीन अत्यन्त गम्भीरता से यह घोषणा करते हैं --

घोषणा — समस्त सेनाओं को ईरान की सीमा के विभिन्न भागों पर एकत्र होकर उन धर्म-विद्रोहियों का पद्दलन करना चाहिए जो मुस्लिम धर्म के विरुद्ध हैं। अरब जाति का यह कर्तव्य है कि पैग़म्बर मुहम्मद की इस शिक्षा पर कि "जिन्होंने तुम्हें दुःख पहुँचाया है तुम भी उन्हें दुःख पहुँचाओ," अमल करे। अतः यह आवश्यक है कि युवा-वृद्ध, छोटे-बड़े, बुद्धिमान व निर्बुद्धि, कृषक व योद्धा सब के सब बिना किसी

भेद-भाव के स्वधर्मियों की सहायता के लिये उठ खड़े हों, हथियार बाँध लें और इस्लाम के झण्डे को ऊँचा करें और उन लोगों को भी, जो उसी जाति के हैं, ख़ुदा की राह में धार्मिक युद्ध में सम्मिलित होने के लिये आमन्त्रित करें। उन लोगों को, जो धर्म के सहायक होंगे, अपने परिश्रम का ख़ुदा से अच्छा पुरस्कार मिलेगा और हम भी उनसे प्रसन्न होंगे। हमने सम्भ्रान्त व्यक्तियों को कुछ सभ्यों के साथ रवाना किया है। मिर्जाजान कोशकची सहवाई जो हमारी जाति के सब से अधिक युद्ध-निपुण हैं, रईस मीरअली खाँ और दूसरे अफ़सरों तथा रईसों को २५ हज़ार फ़ौज के साथ ईरान के विभिन्न भागों में रवाना किया है। शाहज़ादा नवाब शमशीरुद्दौला कमाण्डिङ्ग-अफ़सर की अध्यक्षता में ३० हज़ार फ़ौज रवाना की गई है। ग़ुलाम हुसेन खाँ दफ़ेदार व जाफ़र कुली खाँ को सवारों के रेजिमेण्ट के साथ किरमान रवाना किया गया है। २० हज़ार सशस्त्र फ़ौज युद्ध-सामग्री के साथ ग़रीबिया व करीबिया को भेजी गई है और नवाब अहसनुस्सल्तनत ३० हजार जवानों, ४० तोपों तथा अन्य युद्ध-सामग्री के साथ कच्छ व उत्तरीय प्रान्त सिन्ध की ओर रवाना हो गये हैं। ये फ़ौजें इसलिये रवाना की गईं हैं कि अफ़ग़ानिस्तान पर विजय पा लें तो आगे बढ़ें। रईस सुलतान अहमद खाँ, शाह दौलत खाँ, सुलतान अली खाँ और मुहम्मद आलम खाँ भारत-विजय के लिये उपरोक्त अफ़सरों के अधीन नियुक्त हुये हैं। कृपालु ईश्वर से पूरी आशा है कि वे अवश्य ही

विजय प्राप्त करेंगे। अब वह समय है कि इस देश (भारतवर्ष) के समस्त लोग और समस्त अफ़ग़ानी, जो कुरान पर विश्वास रखते हैं और ख़ुदा के पैग़म्बर मुहम्मद के आदर्शों पर चलते हैं, निडर होकर इस धार्मिक युद्ध में सम्मिलित हों और अपने मुसलमान भाइयों की सहायता के लिये हाथ बढ़ायें; क्योंकि ऐसा करने से उन्हें दोनों संसार का सुख प्राप्त होगा और चूँकि वर्तमान सरहद्दी लड़ाइयाँ कोई साधारण युद्ध नहीं हैं कि जिन्हें थोड़ी सी स्वामि-भक्त सेना छिन्न-भिन्न कर सके अतः समस्त मुसलमानों का यह कर्त्तव्य है, कि उमङ्ग व उत्साह से सहायता करें। इसके अतिरिक्त समस्त अफ़ग़ानी जाति को मालूम हो कि ईरान के शाह का यह अभिप्राय नहीं है, कि अफ़ग़ानिस्तान को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लें; बल्कि इनका वास्तविक अभिप्राय यह है कि कन्धार रईस-रहमदिल खाँ व ख़ूनदिल ख़ाँ के अधिकार में हो और काबुल ज्यों का त्यों अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ के पास रहे और इस भाँति अफ़ग़ान लोग पहले की तरह फिर स्वतन्त्र हो जायँ। अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ को चाहिये कि वह अपने सहायक मुसलमानों की एक कौंसिल इकट्ठा करें और पैग़म्बर की कही हुई बातों (हदीस) को कार्य रूप में परिणत करने का आदेश दें। जो व्यक्ति मन, वचन, कर्म से किसी एक धार्मिक संस्थापक की सहायता करेगा उसको बहुत बड़ा पुरस्कार मिलेगा।

इस घोषणा के प्रकाशन के पूर्व तक अमीर दोस्त मुहम्मद ख़ाँ सदैव कहा करते थे कि यदि ईरानी सेना किसी विधर्मी शक्ति से लड़ने जाय तो हम हथियारों और रुपये से उसकी सहायता करेंगे और स्वयं भी सम्मिलित होंगे। अतएव जिस समय के आने की राह वह देखते थे, वह अब आ पहुँचा है अर्थात् हमने अङ्गरेज़ों से जहाद करने की घोषणा कर दी है। अब अमीर दोस्त मुहम्मद ख़ाँ को चाहिये कि अपने वायदे के अनुसार अपने विधर्मी शत्रुओं के हनन में वे अपनी पूरी शक्ति ख़र्च कर दें क्योंकि स्वर्गीय पुरस्कार पाने का इससे बढ़कर कोई दूसरा अवसर न मिलेगा। यदि वे इस अवसर पर निहत हुये तो उनकी गणना शहीदों में होगी, अन्यथा वे ग़ाज़ी कहलायेंगे। सब दृष्टिकोणों से जहाद से बढ़ कर कोई दूसरा काम नहीं है। किन्तु यदि अमीर दोस्त मुहम्मद ख़ाँ इसके विपरीत कार्य करेंगे तो वह पहले अपने धर्म से दूर हो जायँगे और दूसरे सारे संसार की दृष्टि में पतित समझे जायँगे, तीसरे डरपोक कहलायँगे और चौथे उन पर ईश्वरीय प्रकोप फट पड़ेगा।

ईरान के शाह ने यह भी लिखा है कि "आह! अमीर, क्या तुम धर्म से च्युत होकर अङ्गरेज़ों से मिल गये हो। मैं मुसलमान के नाते तुम्हें यह सच्ची सलाह देता हूँ कि मेरे साथ हो जाओ और उनके सर्वनाश का उपाय सोचो। यह भी समझ रक्खो कि सब मुसलमान इस बात की शिकायत करते हैं कि अमीर ने अङ्गरेज़ों से मिल कर अपने धर्म की अवनति की है। यदि

केवल प्रलोभन ही तुम्हारे इस व्यवहार का कारण हो तो मुझसे दुगुना रुपया ले लो। क्या तुमने सुना नहीं कि अङ्गरेज़ों ने भारत के गण्यमान रईसों तथा शासकों के साथ कैसे-कैसे दुर्व्यवहार किये हैं ?"

अमीर ने इस चिट्ठी का बड़ा आदर किया और स्वात के शासक के साथ उपस्थित होने का वायदा किया है। शाह ईरान हिरात में प्रवेश कर चुके हैं। कन्धारी फ़ौज ने उन समस्त अङ्गरेज़ों को क़त्ल कर डाला जो आगे बढ़ गये थे।

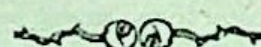
'पञ्जाबी' का सम्पादक लिखता है कि चूँकि घोषणा बहुत लम्बी है अतएव उसने उससे कुछ उद्धरण ले लिये हैं। उसके विचार में जो बात हमारे लिये हितकर है वह यह है कि महमरा पर अधिकार कर लिया गया है और यह कागज हाथ आगया है, नहीं तो यह यहाँ तक कभी न पहुँच सकता।

ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद है कि महान् बृटिश राज्य के प्रताप का सूर्य्य गगन के चरम शिखर पर चमक रहा है। यह विश्वास कर लेना चाहिये कि शाह ईरान का सारा परिश्रम निष्फल होगा। 'पञ्जाबी' समाचार-पत्र का उद्धरण यहाँ समाप्त हो गया है और अब हम समाचार-पत्र "इङ्गलिशमैन" की राय पर दृष्टिपात करते हैं। 'जन-प्रवाद है कि एक विशाल सेना बहुत ही शीघ्र बोलन की घाटी पर पहुँचना चाहती है। परन्तु हम इस समाचार पर विश्वास करने को तैयार नहीं हैं; क्योंकि अब गरमी की ऋतु आ गई है। हमें सूचना मिली है कि दोस्त

मुहम्मद ख़ाँ का भतीजा सुल्तान जान ईरान के शाह से मिल गया है और अब एक सेना के साथ ख़िरह के मार्ग से कन्धार की ओर बढ़ रहा है। कुछ पक्षपाती मुग़ल अपने सहधर्मियों से मिलने के लिये ईरान रवाना हो गये हैं। इस घटना ने अमीर दोस्त मुहम्मद ख़ाँ को बहुत परेशान कर रक्खा है, क्योंकि यह मुग़ल अपने धार्मिक सिद्धान्तों तथा युद्ध-नीति के लिये प्रसिद्ध हैं। २३ अप्रैल, सन् १८५७ को मेजर लैम्ब्सडन कुछ अङ्गरेज़ी अफ़सरों और फ़ौजदार ख़ाँ सरकारी एजेण्ट के साथ 'नाराव' पहुँचे हैं।' 'सिन्धनि' नामक कराची-पत्र का सम्पादक बम्बई के 'टाइम्स' नामक पत्र का उल्लेख करते हुये अपनी संख्या ३३ के अङ्क में यों लिखता है—'समाचार मिला है कि ५० हज़ार ईरानियों ने ३ या ४ रूसी अफ़सरों की अध्यक्षता में 'बूशहर' पर अधिकार कर लिया था, किन्तु अङ्गरेज़ों ने फिर उसे छीन लिया और ३ हज़ार रूसी, जो युद्ध में ईरानियों से विलग हो गये थे, पीछे हट गये और उनको भीषण हानि सहन करनी पड़ी। उत्तर की ओर एक विशाल सेना जमा हो रही है। सुना गया है कि कास्पियन सागर तथा बुख़ारा की ओर रूसी शक्तियाँ बहुत प्रबल हैं। 'पञ्जाबी' का सम्पादक लिखता है कि ईरानियों ने सम्पूर्ण प्रबन्ध कर लिया है और अनेक स्थानों, उदाहरणार्थ आवारगञ्ज, कोकन-कुश इत्यादि में छावनियाँ स्थापित की हैं जहाँ आवश्यकता की वस्तुयें प्रभूत संख्या में एकत्रित कर ली हैं। इकराम ख़ाँ, रईस

मुहम्मद अज़ीम खाँ, हैदर खाँ, अफ़ज़ल खाँ और जलालुद्दीन खाँ वल्द अकबर खाँ बादशाह के साथ हैं और ग़ुलाम हैदर खाँ को शाह ईरान की ओर से छत्तीस हज़ार रुपया इनाम मिला है। और वह (ग़ुलाम हैदर खाँ) दिलोजान से बादशाह पर बलि होने के लिये तैयार है और केवल मार्ग खुलने की प्रतीक्षा कर रहा है। आश्चर्य नहीं कि जो ईरानी कन्धार में प्रविष्ट हो जायँ और आगे बढ़ें। पेशावर से आने वाले यात्रियों के वर्णनों से मालूम होता है कि अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ के वचनों तथा प्रतिज्ञाओं पर विश्वास न करना चाहिये किन्तु ईश्वरीय शक्ति इतनी प्रबल है कि उन्हें उसने अब तक रोक रक्खा है। और अब यह कहा जाता है कि बृटिश फ़ौज पेशावर में एकत्र हो रही है। यदि इस ओर कोई युद्ध हुआ तो उसका परिणाम रक्तपात के अतिरिक्त और क्या हो सकता है। हाल में ईरानी समाचार आने बन्द हो गये हैं। हमारे पाठक अनभिज्ञ लोगों की तरह यह न समझ लें, कि सरकार ने समाचारों का प्रकाशन बन्द कर दिया है। इसके विपरीत सरकार की तो यह इच्छा है कि संसार के दूर दूर के स्थानों के सही सही समाचार जनता के सामने खोल कर रख दिये जायँ और सारा देश समाचार-पत्रों से लाभ उठाये। यही कारण है कि हाकिम लोग स्वयं समाचार-पत्र पढ़ते, उन पर विश्वास रखते और अपनी निजी जेब से ख़र्च करके प्रकाशकों को प्रोत्साहन देते हैं। किन्तु यदि समाचार स्वयं ही न आवें तो इसका क्या उपाय। ख़ैर! जो लोग दूरस्थ स्थानों के समाचार

पढ़ते हैं, उन्हें प्रतीक्षा करनी चाहिये; क्योंकि अब जो डाक आयेगी उसमें ताज़े समाचार, चाहे वे सन्धि के हों अथवा युद्ध के, अवश्य आयेंगे। यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं निष्पक्ष रूप से उन्हें ज्यों का त्यों प्रकाशित कर दूँगा, क्योंकि हमारी सरकार की भी यही इच्छा है कि किसी सच्ची बात को छिपा न रक्खा जाय और यही कारण है कि उसका साम्राज्य दिन-प्रति-दिन उन्नति कर रहा है और विज्ञान तथा कला-कौशल की पहले से बहुत अधिक वृद्धि हो रही है। सर्वशक्तिमान् इस न्यायी सरकार को अनन्त काल तक सुरक्षित रक्खें।



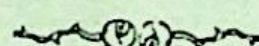
देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या ९, खण्ड ४—तारीख़ ३ अगस्त, १८५७

ईरानी सेना का आगमन—मेरे एक मित्र, जिनके विचार अत्यन्त प्रौढ़ हैं और जो फ़ारसी भाषा बोलते हैं, हाल ही में आये हैं। वह बयान करते हैं कि वे ईरानी फ़ौजें जो सुलतान जान खाँ वल्द ख़ूनदिल खाँ की अध्यक्षता में बहुत काल से हिरात के निकट 'फ़राह' नामक स्थान पर पड़ी हुई थीं, अब शाह-ईरान की आज्ञा से कन्धार की ओर बढ़ रही हैं। यह सुन कर अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ का लड़का दो या तीन हज़ार सिखे-सिखाये सिपाहियों के साथ सामने आया। लड़ाई पूरी छः दिन तक होती रही और दोनों ओर के सैकड़ों आदमी खेत रहे। अन्त में अमीर का लड़का युद्ध-क्षेत्र से हार कर भाग निकला और एक क़िले में उसने अपने आपको बन्द कर लिया। ईरानी फ़ौज ने पूर्णरूप से कन्धार का घेरा डाल दिया और रसद का आना चारों ओर से बिल्कुल बन्द कर दिया। इसलिये अमीर के लड़के ने काबुल से सहायता माँगी है। सुना है कि अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ बहुत शीघ्र सेना रवाना करेंगे। यह भी बयान किया जाता है कि अमीर ने शाह-ईरान के पास एक विनम्र प्रार्थना-पत्र भेजा है जिसमें कहा गया है कि वे भी बादशाह की

प्रजा या सेवक हैं और उन्हें अङ्गरेज़ों को मदद देने का किञ्चित्मात्र भी ध्यान नहीं है। उन्होंने बादशाह पर हिन्दुस्तान की ओर फ़ौजें रवाना करने के लिये ज़ोर दिया है और वायदा किया है कि वे अपनी शक्ति भर रसद या फ़ौज देने से कभी इन्कार न करेंगे। यह भी कहा गया है कि अमीर शाह ईरान को तोहफ़े भेजने वाले हैं। हिरात के रईस शाहज़ादा मुहम्मद यूसुफ़ हिन्दुस्तान और अङ्गरेज़ों के समाचार हर समय शाह ईरान को पहुँचाते रहते हैं और शाह ईरान को इन शाहज़ादे पर बहुत विश्वास है और वे बहुधा इन्हीं के मतानुसार कार्य करते हैं।



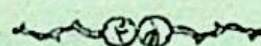
देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

मुख्य लेख, संख्या ६, खण्ड ४—ता० १० अगस्त, १८५७

शाह-ईरान की चाल—शाह-ईरान ने अङ्गरेज़ों से कई लड़ाइयाँ लड़ने के पश्चात् फ़ररुख खाँ को सन्धि करने की प्रार्थना के लिये भेजा है। मैंने पहिले ही समझ लिया था कि यह युद्ध बिना किसी राजनैतिक चाल के नहीं है। किसी ने क्या ही अच्छी बात कही है—"किसी देहाती का सलाम बिना किसी उद्देश्य के नहीं है।" मुझको पूर्ण विश्वास था कि इस प्रार्थना में कोई न कोई चाल अवश्य छिपी हुई है। और मैं अनुभव करता हूँ कि मुझे अपनी बुद्धिमत्ता पर बधाई देनी चाहिये; क्योंकि मुझको विश्वासपात्र काफ़िरों के घातकों से ज्ञात हुआ कि ईरानियों का असली अभिप्राय हिरात पर अधिकार करना और अङ्गरेज़ों को बूशहर से निकालना था; अन्ततः वही हुआ, जिसकी आशा थी। अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि की शर्तों के अनुसार अङ्गरेज़ों ने बूशहर ख़ाली कर दिया है किन्तु ऐसा होने के पश्चात भी शाह-ईरान ने हिरात नहीं छोड़ा। इसके अतिरिक्त अङ्गरेज़ अपने निकाले जाने पर बहुत लज्जित और परेशान हैं और कहते हैं कि वे ईरानियों से इसकी कैफ़ियत तलब करेंगे। परन्तु यह निरर्थक धमकी है। हमें विचार करना चाहिये, कि जब उनके

पास शक्ति थी तभी वे क्या कर सके थे जो अब कुछ करेंगे। एक सज्जन यह भी बयान करते थे कि ईरानियों ने यह समझ कर, कि इस अवसर को हाथ से न जाने देना चाहिये, पाँच हज़ार सिपाहियों की एक सेना को कन्धार रवाना किया है। अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ काफ़िरों के मित्र हैं लेकिन गुप्त रूप से वह ईरानियों को बहकाने और उनके साथ षड़यन्त्र रचने के समस्त उपाय काम में ला रहे हैं, इसी का यह फल है कि ईरानी सेना, जिसमें कुछ काबुली अफ़सर भी हैं, दृढ़ता के साथ हिन्दुस्तान की ओर बढ़ रही है। उपरोक्त समाचारों को सुनकर ईसाई बहुत परेशान हो रहे हैं और उन्हें विश्वास है कि कम्पनी के पतन का समय निस्सन्देह निकट आ पहुँचा है।





देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या ३४, खण्ड १६—तारीख़ २३ अगस्त, १८५७ ई०

ईरान के सैनिक समाचार—पञ्जाब और पेशावर की ओर से आने वाले कुछ लोगों का कथन है कि ईरानी सेनायें अटक तक पहुँच गई हैं। यद्यपि मुझे व्यक्तिगत रूप से इस बात पर विश्वास नहीं है, तथापि मैंने जन-साधारण के मुँह से यह प्रवाद सुना है और इसी कारण मैं ने इसे प्रकाशित किया है और सम्भव भी है कि ऐसा हो, क्योंकि किसी प्रकार ऐसा अनुमान के बाहर नहीं है कि वह अनर्गल और असत्य मान लिया जाय। किन्तु यह अवश्य ख़्याल आता है, कि जिस प्रकार यह जन-प्रवाद फैलाया जाता है उस पर किसी भाँति भी विश्वास और भरोसा नहीं किया जा सकता।

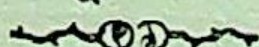


देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या ८, खण्ड ४—तारीख़ २४ अगस्त, १८५७

ईरानी सेना का निकट पहुँचना—'ट्रायम्फ़ेण्ट न्यूज़' के सम्पादक लिखते हैं कि उन्होंने पञ्जाब और पेशावर से आने वाले यात्रियों से सुना है कि ईरानी सेनाओं ने अटक तक का मार्ग साफ़ कर लिया है। मुझे कुछ कारणों के आधार पर यह समाचार विश्वसनीय प्रतीत होता है। प्रथमतः कोई व्यक्ति तब तक कुछ नहीं कहता जब तक उसके पास पुष्ट प्रमाण नहीं होते। दूसरे सिद्धात्मा हज़रत शाह नेमतुल्ला साहब की यह भविष्यवाणी है कि भारतवर्ष पर ईसाइयों और अग्निपूजकों का शासन सौ वर्ष तक रहेगा फिर जब उनके साम्राज्य में अन्याय और अत्याचार होने लगेगा तो एक अरब का शाहज़ादा उठेगा और बड़े गौरव के साथ उन्हें क़त्ल करेगा। तीसरे जब मुलतान की सेनाओं ने उपद्रव किया तो उन्होंने कहा था कि हमारे अफ़सरों और ईरान के शाह में पत्र-व्यवहार हो रहा है। चौथे शाह ईरान ने यह सुन कर कि बृटिश साम्राज्य में मेरा एक सच्चा मित्र विद्यमान है एक जासूस रवाना किया था। वह जासूस यहाँ आया था। उसने मेरे एक दोस्त से कहा था कि ईरान के शाह ने हिन्दुस्तान आने का पक्का इरादा कर लिया है अतः चाहे वह जल्दी आये या देर से, किन्तु उसके आने में सन्देह नहीं। झूठ-सच भगवान जाने।

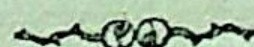


देहली के समाचार-पत्र

'सादिकुल अख़बार' से उद्धृत

संख्या ३७, खण्ड १९—तारीख़ १३ सितम्बर, १८४७

ईरान—कुछ लोग फिर कह रहे हैं कि ईरानी सेना 'बोलन की घाटी' और 'बीबी नरी' पर आ गई है और अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ ने हर्षपूर्वक अपनी सीमा से उसको गुज़रने दिया है। किन्तु इस हिन्दी कहावत के अनुसार कि 'ब्राह्मण भोजन के न्योते पर तभी विश्वास करता है जब परोसी थाली सामने आती है' भारतवासी इस बात पर उसी समय विश्वास करेंगे जब कोई आँखों-देखा प्रमाण मिलेगा। किन्तु कई कारणों के आधार पर हम यह कहे बिना नहीं रह सकते, कि वर्तमान समाचार चाहे सच हो अथवा झूठ, हमें इस बात पर विश्वास करना चाहिये कि एक न एक दिन ईरानी फ़ौजें आवेंगी, चाहे बोलन की घाटी से होकर आयें अथवा बम्बई या सिन्ध से। वैसे तो भविष्य की बात केवल ईश्वर ही जानता है।



नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस

का

संक्षिप्त

सूचीपत्र

रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

बेगमों के आँसू

[श्री० मुन्शी नवजादिक लाल श्रीवास्तव, सम्पादक 'चाँद']

इस पुस्तक में भारत के अन्तिम सम्राट् बहादुरशाह के सिंहासन-च्युत होने पर राजवंश की जो छीछालेदर हुई है, उसकी करुण कहानी अङ्कित है। बादशाह-सलामत की बेटियों तथा बहुओं को किस प्रकार गली-गली की ठोकरें खानी पड़ीं ; किस प्रकार सिसक-सिसक कर उन्हें परवशता के पहलू में दम तोड़ना पड़ा और किस प्रकार वे कुत्तों और बिल्लियों की मौत मरी हैं, इन्हीं सब विषयों पर भरपूर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में पाठकों को शाहज़ादों की भी दर्दनाक कहानियाँ मिलेंगी, जिनमें से कई को घसियारे एवं ठेला हाँकने वालों का जीवन व्यतीत करना पड़ा है। उर्दू में इस पुस्तक के अब तक ६ संस्करण हो चुके हैं। मूल्य १॥) रु०

बेचारे अङ्गरेज़ों की विपता

[श्री बलखण्डी दीन सेठ, बी० ए०]

इस पुस्तक में पाठकों को वे लोमहर्षक घटनाएँ मिलेंगी, बेचारे अङ्गरेज़ों को सन् ५७ में जिनका शिकार होना पड़ा था ! झुण्ड के झुण्ड निःशस्त्र अङ्गरेज़ों का बात की बात में भारतीयों-द्वारा मार डाला जाना, उनकी स्त्रियों के गुप्ताङ्गों में भाले घुसेड़ कर उनका अन्त करना, बेचारे अबोध अङ्गरेज़ बच्चों का पटक-पटक कर मारा जाना, ऐसी भीषण दुर्घटनाएँ हैं, जिन्हें पढ़ कर लज्जा से मस्तक स्वयं ही नत हो जाता है। इस पुस्तक में १२ अङ्गरेज़ स्त्री-पुरुषों की 'आप बीती' घटनाओं का उल्लेख भी है। मूल्य ॥)

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

सन् ५७ के ग़दर में

अफ़सरों की चिट्ठियाँ

[श्री जयनारायण कपूर, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

इस पुस्तक में उन अलभ्य पत्रों का संग्रह है, जो अङ्गरेज़ अफ़्सरों के बीच में आये-गये थे और जिनके द्वारा उस समय के हाकिमों की कमज़ोरियों का पता चलता है। इन चिट्ठियों-द्वारा पाठकों को यह भी पता चलेगा, कि पञ्जाब के राजाओं के सामने किस प्रकार चारा डाल कर उनसे सहायता प्राप्त की गई और साथ ही यह भी स्पष्ट हो जायगा, कि यदि देशी रियासतों के राजा उस समय सहायता न देते, तो अङ्गरेज़ों का विजयी होना एक बार ही असम्भव था! उर्दू में इस पुस्तक के कई संस्करण हो चुके हैं। मूल्य केवल ।)

भारत के अन्तिम सम्राट्

बहादुरशाह का मुक़दमा

[श्री गोपीनाथ सिंह, बी० ए० (ऑनर्स)]

उनके पराजित एवं बन्दी होने पर देहली के अन्तिम सम्राट् स्वर्गीय बहादुरशाह पर, उनके बाग़ियों से मिल कर उपद्रव कराने का अभियोग चलाया गया था और परिणाम-स्वरूप उन्हें देश-निकाले का दण्ड दिया गया। इस पुस्तक में उसी सनसनीपूर्ण मुक़द्दमे के प्रत्येक दिन की कार्यवाही का विवरण दिया गया है। इसमें अङ्गरेज़, हिन्दू तथा मुसलमानों द्वारा दी गई मनोरञ्जक गवाहियाँ, उनके विस्तृत बयान, बहादुरशाह की उज़्रदारियाँ, उनका सनसनीपूर्ण बयान आदि भी पाठकों को मिलेंगे। मूल्य केवल १॥।) रु०

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

ग़दर-देहली के अख़बार

[श्री० जयनारायण कपूर, बी० ए० एल्-एल्० बी०]

जिन पाठकों ने "बहादुरशाह का मुक़दमा" पढ़ा है, उनका अध्ययन सर्वथा अधूरा रह जायगा, यदि उन्होंने इस छोटी-सी पुस्तक को नहीं पढ़ा ! "सादिकुल-अख़बार" से कई समाचार भी इस पुस्तक में उद्धृत किए गए हैं; जिन पर अङ्गरेज़ों को विशेष आपत्ति थी। मुक़दमें में बराबर जिन समाचारों एवं ईरान की साज़िशों की चर्चा आई है, उन पर भी इस पुस्तक से भरपूर प्रकाश पड़ता है। छोटे-छोटे प्रेसों में छपने वाले अख़बारों ने भी ग़ज़ब कर दिया था। स्वयं पढ़ कर देख लीजिए। मूल्य लागत मात्र—केवल चार आने !!

ग़दर सम्बन्धी गुप्त चिट्ठियाँ

[श्री० बलखण्डी दीन सेठ, बी० ए०]

इस पुस्तक में उन गुप्त चिट्ठियों का संग्रह है, जो देहली के अन्तिम सम्राट् बहादुरशाह और विप्लवकारियों के बीच आई-गई थीं और जिन्हें विप्लव के बाद अङ्गरेज़ों ने देहली के लाल क़िले में पकड़ा था। इन पत्रों के पढ़ने से ग़दर-सम्बन्धी बहुत-से ऐसे गुप्त कारणों का पता चलता है, जिससे भारतवासी आज तक अनभिज्ञ हैं। मूल्य केवल आठ आने !

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

देहली की झाँकनी

[श्री जयनारायण कपूर बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

इस पुस्तक में पाठकों को सन् १८५७ ई० के भीषण विप्लव के समय देहली की वास्तविक कश-मकश का परिचय मिलेगा। इस महत्वपूर्ण पुस्तक में जिन विषयों पर प्रकाश डाला गया है, उनमें से कुछ के शीर्षक इस प्रकार हैं :—

(१) देहली अङ्गरेज़ों से क्यों नाराज़ थी ? (२) बादशाह-शाहआलम और अङ्गरेज़, (३) बादशाह को देहली के क़िले से निकालने का प्रस्ताव, (४) अकबरशाह का सिंहासनारोहण, (५) बहादुरशाह का सिंहासनारोहण, (६) बादशाह की भेंट क्यों बन्द कर दी गई ? (७) गद्दीनशीनी की क़ानूनी अड़चनें, (८) देहली के उपद्रवों का प्रारम्भ तथा उसके गुप्त कारण, (९) उपद्रवों की भीषणता, (१०) अङ्गरेज़ों द्वारा किए गए भयङ्कर अत्याचार, (११) भारतीय सैनिकों द्वारा अङ्गरेज़ों पर की गई रोमाञ्चकारी ज़्यादतियाँ, (१२) निर्दय हिन्दुस्तानी और उनके अत्याचार, (१३) देहली के कमिश्नर की असावधानता, (१४) देहली की पराजय, (१५) क्या वास्तव में मेजर हडसन ने शाहज़ादों का ख़ून पिया था ? (१६) जामा मस्जिद का भीषण युद्ध, (१७) बहादुरशाह का बन्दी होना, (१८) लॉर्ड गवर्नर बख़्त खाँ का भाषण, (१९) मिर्ज़ा इलाही-बख़्श का भाषण, (२०) ग़दर का वास्तविक चित्र, (२१) क्या वास्तव में शाहज़ादों के कटे हुए सर बूढ़े बादशाह को भेंट किए गए थे ? (२२) चार महीने और चार दिन की बादशाही, (२३) प्रतिष्ठित व्यक्तियों की जेल यातनाएँ, (२४) गवर्नमेन्ट-भक्तों के पुरस्कार, (२५) देहली की महिलाओं की विपत्तियाँ, (२६) हज़ारों फाँसियों का रोमाञ्चकारी दृश्य, (२७) तीन दिन की भीषण लूट आदि-आदि सैकड़ों सनसनीपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं पर इस पुस्तक में भरपूर प्रकाश डाला गया है।

मूल्य १।) रु०

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

नवीन संस्करण ! संशोधित संस्करण !

भारतीय विद्रोह

अर्थात्

राऊलेट कमिटी की रिपोर्ट

[ठाकुर मनजीत सिंह राठौर, बी० ए०; भूतपूर्व एम० एल० सी०]

सन् १८५७ के भीषण विप्लव के बाद भी भारतवासियों ने किस प्रकार और कितनी बार भीषण षड़यन्त्रों-द्वारा अङ्गरेज़ी सरकार को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने के असफल-प्रयत्न किये, कैसी-कैसी निर्मम हत्याएँ तथा राजनैतिक डकैतियाँ कीं, इन्हीं सारी बातों का प्रमाणिक इतिहास पाठकों को इस पुस्तक में मिलेगा। बम्बई, पूना, नासिक, ग्वालियर, अहमदाबाद तथा बङ्गाल आदि के भीषण षड़यन्त्रों का इतिहास छपेकर-बन्धुओं तथा श्री० तिलक, श्री० श्याम जी कृष्ण वर्म्मा, श्री० विनायक सावरकर, श्री० वारिन्द्र घोष तथा लाला हरदयाल जी की गुप्त साज़िशें और मि० रैण्ड, सर कर्ज़न वाइली, मिस कैनेडी, मि० जैक्सन आदि-आदि उच्च पदाधिकारियों की गुप्त हत्याएँ तथा इङ्गलैण्ड तथा पेरिस आदि के रोमाञ्चकारी षड़यन्त्र तथा कई गुप्त समितियों एवं सोसाइटियों के कारनामों का भी पुस्तक में विस्तृत उल्लेख है। जर्मनी ने बङ्गाल में किस प्रकार क्रान्ति का बीजारोपण किया, और हथियारों से लदे हुए जहाज़ भारत में किस प्रकार आए और उनका क्या परिणाम हुआ तथा विदेशों में भारतवासियों की कैसी सनसनीपूर्ण गिरफ़्तारियाँ हुईं, इनका मनोरञ्जक विवरण भी पाठकों को इस पुस्तक में मिलेगा। लिबरल दल के सुप्रसिद्ध पत्र "लीडर" की राय अगले पृष्ठ पर देखिए :—

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

The Leader:

It is a Hindi translation of that interesting and sensational report on the existence of revolutionary conspiracies in India since the year 1897, which was written by what is popularly known as Rowlatt Committee. As a result of the sensational findings of the committee and the recommendations made, that unmerited blot on the Indian statute book, the notorious Rowlatt Bill was enacted into law. What directly followed the enactment of the unpopular measure is now a matter of history. The unprecedented Satyagrah agitation the Punjab "Rebellion" and the present non-co-operation movement were the direct results of the unhappy nostrum prescribed by the committee presided over by Mr. Justice Rowlatt of the King's Bench, London. To appreciate fully why the Government of Lord Chelmsford considered it necessary to enact the measure, it is necessary to glean through the red record of violent and anarchical activities launched by revolutionaries in India and aboard—men like Lala Har Dayal and Shyamji Krishna Verma, Barindra Krishna Ghosh and the Savarkar brothers to name but a few. In our opinion Thakur Manjeet Singh Rathore, has done well in translating the Rowlatt report in easy and fluent Hindi. Those, who read the first part, will in all likelihood wait the publication of the next.

मूल्य केवल १।।) रु०

इस पुस्तक का दूसरा भाग भी छप रहा है।

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

देवी वीरा

रूस की सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारिणी महिला की आत्म-कथा

[श्री० सुरेन्द्र शर्मा, भूतपूर्व सहकारी सम्पादक 'प्रताप']

कुछ सम्मतियाँ

विशाल भारत

"× × देवी वीरा का आत्म-चरित क्या है, एक अत्यन्त मनोरञ्जक उपन्यास है, क्रान्तिकारियों की मानसिक दशा का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान की पुस्तक है, रूस के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है और देशभक्तों के बलिदान का एक हृदय-बेधक नाटक है। × × वीरा के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कैसे हुआ और किस प्रकार उसने अपना जीवन स्वाधीनता-संग्राम में बिताने का निश्चय किया, इसकी कथा किसी मनोरञ्जक उपन्यास से भी बढ़ कर अधिक हृदयग्राही है × × ×। वीरा का आत्म-चरित हमारी आँखों के सामने एक फ़िल्म का काम करता है। कभी हम उसे किसानों में विद्रोह की चिनगारी सुलगाते देखते हैं, तो कभी मज़दूरों में क्रान्ति के भाव भरते। कभी सुबह से ले कर शाम तक ग्रामीण रोगियों को दवा बाँटते हुए पाते हैं, तो कभी रात को ११ बजे तक किसानों को प्रसिद्ध लेखकों की कहानी सुनाते हुए। कभी वह षड़यन्त्रकारियों का सङ्गठन करती हुई पाई जाती है, तो कभी ज़ार की हत्या का उपाय सोचती हुई × ×।"

The Bombay Chronicle:

Vera Figner is regarded as one of the most well-known of the Russian revolutionaries of the time of the Czars. Her Hindi biography will be read with interest.

प्रताप : अनुवादक ने भरसक मूल पुस्तक के गुणों की रक्षा करने का प्रयास किया है और उन्हें इस कार्य में आशातीत सफलता भी मिली है। अनुवादक की भाषा में ओज है और वह सरस है। भाषा और शैली की रोचकता से प्रस्तुत पुस्तक में उपन्यास का-सा आनन्द आता है। प्रत्येक देशभक्त को इस पुस्तक का कम से कम एक बार परायण कर लेना चाहिए।

सैनिक : पुस्तक पढ़ने में शिक्षाप्रद तथा रोचक उपन्यास का-सा आनन्द आता है। × × × हम निःसङ्कोच यह कह सकते हैं, कि भारतीय देवियों के हाथों में यदि यह पुस्तक दी जाय तो वे अवश्य त्याग, बलिदान, स्वदेशानुराग आदि की शिक्षा ग्रहण कर सकती हैं।

माधुरी : देवी वीरा का एक गौरवपूर्ण आदर्श जीवन है। इसमें विचारशीला देवी वीरा की जीवन-घटनाओं तथा अनुभवों का बड़ा सुन्दर वर्णन है। × × × वीरा फ़िगनर की देश-हितैषिता, कार्य-कुशलता, असमान्य वीरता आदि गुणों का प्रभावोत्पादक वर्णन पठन-योग्य है।

साहित्याचार्य स्वर्गीय पं० पद्मसिंह जी शर्मा :

'देवी वीरा'—रूस की क्रान्तिकारिणी देशभक्त विदुषी महिला 'वीरा-फ़िगनर, की रोमाञ्चकारिणी आत्म-कथा है। हिन्दी के सुलेखक श्रीयुत पण्डित सुरेन्द्र शर्मा जी ने हिन्दी में उलथा करके इसे प्रकाशित किया है। पुस्तक की भाषा इतनी साफ़ और सरल है कि अनुवाद मालूम

पराधीनों की विजय यात्रा

[मुन्शी नवजादिकलाल श्रीवास्तव 'चाँद'–सम्पादक]

स्वाधीनता मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है और उसकी प्राप्ति के लिए उसने सतत उद्योग भी किया है। संसार की ऐसी कोई जाति नहीं, जिसने पराधीनता के बन्धन से विमुक्त हो कर स्वतन्त्र होने की चेष्टा न की हो। इस चेष्टा में उसने कैसी-कैसी भीषण और रोमाञ्चकारी विपत्तियों का सामना किया है और किस वीरता के साथ हँसते-हँसते आत्मोत्सर्ग किया है? उसकी कहानी बड़ी ही रोचक, बड़ी ही हृदय-ग्राहिणी और बड़ी ही मनोरञ्जक है। इस पुस्तक में संसार के ऐसे ३६ छोटे-बड़े पराधीन देशों की स्वतन्त्रता-प्राप्ति या स्वतन्त्रता की रक्षा में मर-मिटने की मनोहर कथाएँ संग्रहीत हैं। इसलिए यदि इसे संसार का संक्षिप्त इतिहास कहा जाए, तो कोई अत्युक्ति नहीं। संसार के इस संक्षिप्त इतिहास का वर्णन ऐसे सरल, मधुर और रोचक ढङ्ग से किया गया है, कि पढ़ने वाले को उपन्यास का मज़ा मिलता है और क्या मजाल कि कोई पाठक पढ़ना आरम्भ करने पर बिना समाप्त किए ही पुस्तक रख दे।

यदि आप संसार के इतिहास के लुब्बेलुबाब की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो इसे अवश्य पढ़िये। और, अगर आप संसार की स्वतन्त्रता के इतिहास के ज्ञाता हैं और उसके महत्त्व तथा उसकी आवश्यकता के भी क़ायल हैं तो केवल हिन्दी जानने वाले अपने बच्चों और स्त्रियों के लिए तो इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य ही ख़रीद लीजिए; क्योंकि उन्हें संसार के इतिहास का ज्ञान प्राप्त कराने का ऐसा सुलभ साधन दूसरा न मिलेगा और न हिन्दी में ऐसी कोई दूसरी पुस्तक ही अभी तक प्रकाशित हुई है। छपाई की सफ़ाई, काग़ज़ की स्वच्छता और सादगी पर भी यथोचित ध्यान दिया गया है। मूल्य २॥) रु०

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

दुर्लभ पुस्तक ! दुर्लभ पुस्तक !!

आधुनिक रूस

[श्री० प्रभुदयाल मेहरोत्रा, एम० ए०]

'भविष्य' में जिन पाठकों ने सुयोग्य लेखक के ऐतिहासिक लेखों को पढ़ा होगा, वे अवश्य ही आप की खोज तथा विषय-प्रतिपादन के क़ायल होंगे।

इस महत्वपूर्ण पुस्तक में पाठकों को रूस का संक्षिप्त इतिहास, सन् १९०५ तथा १९१७ की भीषण क्रान्तियाँ, उनके परिणाम, अस्थायी सरकार की घोषणा, तीसरी महत्वपूर्ण राज्य क्रान्ति, सोवियट-शासन की प्रारम्भिक कठिनाइयाँ, सोवियट गवर्नमेण्ट के महत्वपूर्ण कार्य, नवीन शिक्षा-प्रणाली, सोवियट रूस का शासन-विधान, मोशिए लेनिन का विस्तृत परिचय तथा सोवियट रूस तथा एशिया की अन्य राष्ट्रों के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण बातें पाठकों की समझ में आ जायँगी। इसके अलावा इस पुस्तक में रूस की पञ्च-वर्षीय-योजना आदि के सम्बन्ध में भी भरपूर प्रकाश डाला गया है। मूल्य लागतमात्र—केवल १।) रु०

हँसी की बात

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए० एल्-एल्० बी०]

एक दम अनोखी, निराली और ग़ज़ब की फड़कती, चुलबुलाती और मस्तानी रचना है। 'पते की बात', 'न कहने वाली बात', 'बे पर की बात' इत्यादि ऐसी-ऐसी बेढब और अनोखी बातों की हास्यरस की ऐसी-ऐसी लाजवाब और बे-मिस्ल गल्पें और निबन्ध हैं, कि बात बात पर हँसी की फुलझड़ी छूटती है। हँसाते-हँसाते पेट में बल डाल दे तब इस 'हँसी की बात' की बात है। मूल्य बारह आने

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

माँग की बेढब भरमार ! हँसी की बेढब बौछार !!

क्यों न हो ?

हास्यरस के जगत-गुरु मौलियर के एक

बेढब प्रहसन

के आधार पर हास्यरस-सम्राट् श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

की

बेढब लेखनी

का रचा हुआ

हास्यरस का बेढब नाटक



चाल बेढब

अब भी भला कोई कह सकता है कि हँसी नहीं आती ? ज़रा इस बेढब नाटक को पढ़िये तो। ऐसी बेढब हँसी आवे कि आज तक आई न होगी। रोते को भी हँसाते-हँसाते लोटन-कबूतर बना दे, तब बात है। हास्य-रस के जगत-गुरु की उपज और हमारे हास्यरस-सम्राट् की कला दोनों की करामात का एक ही पुस्तक में चमत्कार देखिये। और सिर्फ़ बारह आने पैसों में।

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस—रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०



प्रकाशक

श्री० आर० सहगल

(संस्थापक 'चाँद' और "भविष्य")

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस

रैन बसेरा :: चुनार, यू० पी०

COVER ONLY PRINTED AT THE A. L. J. PRESS, ALLAHABAD